मेरा नाम देवेन्द्र पाल सिंह है, मैं मूलत: जनपद कासगंज उ० प्र० का निवासी हूँ। वर्तमान में जनपद आगरा में पारिवारिक सैटअप किया है तथा जनपद ललितपुर में जिला मनोरंजन कर अधिकारी पद पर नियुक्त हूँ।
मेरी ज़िंदगी में विवाह के पश्चात् एक पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई, यह घटना एक खुशी का अवसर था क्यों कि प्रथम बार एक पिता बनने की प्रसन्नता थी। मेरी पुत्री कु० त्रविता सिंह का जन्म 9 नवम्बर 2001 को हुआ था। जन्म स्थान अलीगढ़ जनपद का एक नर्सिंग होम था। जन्म के समय पुत्री 'प्रीमैच्योर बेबी' थी। आठवाँ माह में उसका जन्म हुआ एवं दुर्भाग्य से जन्म के समय वह रोई नहीं एवं लगभग 5 मिनट पश्चात् चिकित्सक के प्रयास से उसने रोना प्रारंभ किया।
यह पाँच मिनट विलम्ब से रोना उसके लिए एक घातक स्थिति थी जिसके कारण उसके जन्म की प्रसन्नता भविष्य में एक अंतहीन वेदना, दुख: तथा संघर्ष में बदलनी थी। प्रसवोपरान्त उसको सामान्य बच्ची की तरह माँ को सौंपा गया किन्तु वह अत्यंत कमजोर तथा दुग्धपान करने में सक्षम नहीं दिखी तथा शीघ्र ही उसको ड्रिप आदि पर रखना पड़ा तब फिर उसे पीलिया प्रकट हुआ व फोटोथेरेपी में रखना पड़ा।
उक्त समस्त आरंभिक परेशानियों को पार कर वह नर्सिंग होम से घर लाई गई एवं समस्त परिजनों संग पर वरिश पाने लगी। उसकी आयु लगभग पाँच-छ: माह के होने पश्चात् घर के बुजुर्गों ने बताया कि बेटी के क्रियाकलाप व शिशु सुलभ हरकतें सामान्य नहीं लग रही हैं क्योंकि यह स्वंय करवट नहीं लेती थी तथा हाथ-पाँव नहीं चलाती थी। इस प्रकार उसे शिशु रोग चिकित्सक के यहाँ ले जाया गया जिन्होंने बताया कि यह बच्ची 'लेट माइलेस्टोन सिंड्रोम' से पीड़ित है तथा समस्त कार्य देर से करेगी।
तत्पश्चात् जे० एन० मेडिकल कालेज अलीगढ़ में दिखाया जहाँ उसे फिजियोथेरेपी की सलाह दी गई तथा कुछ और चिकित्सकों को दिखाया जहाँ सी० पी० बच्ची बताया तथा फिजियोथेरेपी की सलाह दी गई। इस बीच बच्ची की दोनों आँखों में तिरछापन तथा 'स्क्विन्ट प्राब्लम' उभर कर आया जिससे कि समस्या और बढ़ गई।
अंत में आगरा में एस० एन० मेडीकल कालेज के शिशु रोग विभाग के हेड चिकित्सक को दिखाया जहाँ पर उन्होंने हमें बहुत विस्तार से समझाया कि बच्ची किस समस्या से ग्रसित है। पहली बार उन्होंने बहुत बारीकी से बताया कि सेरेब्रल पाल्सी बीमारी क्या होती है और बच्चा इससे कैसे प्रभावित होता है कि बच्चा कभी भी स्वतंत्र रूप से न बैठेगी, न तो खड़ी होगी और चलना, दौड़ना आदि संभव नहीं होगा। इस समय मैं और मेरी पत्नी श्रीमती अवनीश सिंह को अत्यंत दुख: , बेचैनी एवं भय लग रहा था। अंतत: हमें पता लग गया कि क्या समस्या है तथा इसका समाधान कितना श्रमपरक, धैर्यपरक तथा संघर्षशीलता की परीक्षा है।
तब से सन् 2002 से आज 2016 तक एक सतत् संघर्ष सेरेब्रल पाल्सी के विरुद्ध हमारे जीवन में चल रहा है जिसमें चरणबद्ध तरह से समस्त चिकित्सक उपाय किए गए। सर्वप्रथम उसके दोनों आँखों के दो आपरेशन कराए गए। आपरेशन उपरान्त उसको चश्मा लगाया गया व दृष्टि प्राप्त होने पर बच्ची ने संतुलन साधा। उसकी फिजियोथेरेपी कराई गई जिससे हाथ पैर सही रहें। यह सब चिकित्सकीय कार्य जनपद अलीगढ़ में हुए। तत्पश्चात् जनपद पीलीभीत में स्थानांतरण होने पर पीलीभीत में 'एक्यूपंक्चर विधि' से भी उपचार कराए जिससे 'न्यूरो सिस्टम' में मजबूती आई किन्तु हाथ-पैर में टेढ़ापन व स्पास्टिसिटी समस्या ठीक नहीं हुई फिर बरेली में फिजियोथेरेपी व रीहैबलीटेशन की उपचार चली फिर लखनऊ में आयुर्वेद ट्रीटमेंट, पी० जी० आई० लखनऊ से दवाएँ तथा आगरा व दिल्ली से उपचार चलता रहा जिसमें बच्ची की चिकित्सा एक परिपूर्ण तरह से नहीं मिल पा रही थी, वह चलने-फिरने में सक्षम नहीं हुई।
अंत में मुझे मेरे एक मित्र ने अवगत कराया कि आप जनपद इलाहाबाद में डा० जितेन्द्र कुमार जैन के त्रिशला अस्पताल में दिखा लें। जब हम पहली बार सन् 2015 में बच्ची को ले कर यहाँ आए तो पहली बार में ही यह अनुभव हो गया कि जितने उपचार के समस्त साधन यहाँ उपलब्ध हैं वो अब तक हमें कहीं और नहीं मिले थे। कम शब्दों में कहें तो 'समस्त मर्जों की दवा एक ठिकाने पर' यहाँ मिल गई। यहाँ डा० जैन के कुशल निर्देशन में आपरेशन, फिजियोथेरपी, रीहैबलीटेशन ट्रेनिंग, दवाएँ प्रोस्थेटिक सामान, ग्रूमिंग प्रोग्राम, सोशल डेवलेपमेंट तथा जिम, मशीन एक्सरसाइज, कैसलेशन तथा जो कुछ इस प्रकार के बच्चों के विकास के लिए चाहिए एक छत के नीचे उपलब्ध है। यहाँ एक ऐसी सुविधा इन बच्चों को मिलती है जो हमें अब तक अन्यत्र कहीं नहीं मिल पाई थी तब से हमने यहाँ 9 माह अपनी पुत्री की निरन्तर चिकित्सा यहाँ कराई है।
हम उसे बिस्तर पर लेटी अवस्था में लाए थे आज प्रभु कृपा से डा० जैन के उचित उपचार से वह छड़ी से स्वंय चलने-फिरने में सक्षम हो गई है। यह एक चमत्कार परक लगता है, किन्तु सत्य है कि समस्या है या समाधान यहीं उपलब्ध है। मैं व्यक्तिगत तौर पर यह अंतर्मन से महसूस करता हूँ कि काश हमें पहले यहाँ की जानकारी मिल जाती तो हम दर-ब-दर इलाज के लिए इधर-उधर नहीं जाते। हमारा बहुत समय, ऊर्जा व श्रम जो बच्ची के इलाज के लिए अन्यत्र खपाव हुआ वह तो बचता ही, यहाँ चिकित्सालाभ जल्दी मिल जाता जिसका पुत्री के समस्त प्रकार के मानसिक शारीरिक, सामाजिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता।
आगे भविष्य में पुत्री की चिकित्सा संबंध में जो भी आवश्यकता है, हम त्रिशला फाउंडेशन से जुड़े रहेंगे क्योंकि सही समाधान हमें यहीं से मिलता रहेगा। डा० जैन के द्वारा पुत्री के आगे चिकित्सा क्रम में जो सुझाव व निर्देश दिए गए हैं उनका पालन करते हुए आशा करते हैं कि पुत्री को और चिकित्सालाभ मिलेगा व वह स्वंय सक्षम रूप से बिना सपोर्ट के चल-फिर सकेगी, अपना विकास कर सकेगी।
अंत में मैं प्रभु परम पिता से कामना करता हूँ, प्रार्थना करता हूँ कि वह डा० जैन को, उनके समस्त सहयोगियों को, इस संस्था से जुड़े प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष जनों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें। यह संस्था अपने पुनीत कार्यों में सदैव सफल रहे, उपकार करती रहे तथा लोगों का सहयोग प्राप्त करती रही, आगे बढ़ती रहे।

शुभकामनाओं सहित
आदर सहित

आपका शुभेच्छु
[signature] 18/5/2016
देवेन्द्र पाल सिंह
जिला मनोरंजन कर
अधिकारी
ललितपुर
9410626667